बाल केन्द्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है–

बाल केनिद्रत शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ–

1. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में प्रत्येक समुदाय के बालक एवं बालिकाओं के लिए शिक्षा व्यवस्था निश्चित की जाती है,
2. बालकों के लिए शिक्ष व्यवस्था एवं विद्यालय का वातावरण रूचि पूर्ण बनाया जाता है,
3. बालकों के विकास का वातावरण उत्पन्न करने की प्रक्रिया के रूप में बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था को स्वीकार किया जाता है,
4. बालकों की सहभागिता के रूप में प्रत्येक गतिविधि में तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में बालकों को संलग्न रखा जाता है,
5. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था बालकों के लिए रूचिपूर्ण वातावरण का निर्माण करती है,
6. बालकों की व्यावसायिक शैक्षिक एवं अशैक्षिक रूचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा व्यवस्था का प्रस्तुतीकरण बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में किया जाता है,
7. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में बालकों को वर्तमान की चुनौतियों के लिए तैयार किया जाता है,
8. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में बालकों भविष्य में आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान की जाती है, जिससे उनकास भविष्य भी स्वर्णिम हो सके,

9. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में सभी कुछ बालक द्वारा कराया जाता है जिससे उसमें प्रत्येक कार्य के प्रति उत्तरदायित्व समझने एवं निर्वहन करने की व्यवस्था की जाती है,
10. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में उन सभी सिद्धान्त, गतिविधियों एवं व्यवस्थाओं को सम्मिलित किया जाता है जिससे छात्रों के लिए स्वास्थ्यप्रद वातावरण का निर्माण हो सके,
11. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यालय एवं समंदायस में समन्वयन स्थापित किया जाता है जिससे दोनों एक–दूसरे की अपेक्षाओं की पूर्ति कर सकें,

प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ–

1. इसमें पाठ्यक्रम का स्वरूप समेकित होता है,
2. इसमें प्रयोगात्मक अधिगम एवं अवशारणात्मक अधिगम पर बल दिया जाता है,
3. प्रगतिशील शिक्षा में छात्रों को समस्याएँ प्रदान की जाती हैं, इसके अनुरूप उनको समाधान प्रस्तुत करना होता है,
4. प्रगतिशील शिक्षा में छात्रों को सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम एवं गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है,
5. प्रगतिशील शिक्षा में सामूहिक कार्यों को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे छात्रों में सामाजिक मूल्यों का विकास होता है,
6. प्रगतिशील शिक्षा के माध्यम से छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने एवं निर्वहन करने का योग्यता विकसित की जाती है,
7. इसमें शिक्षक को पूर्ण स्वतन्त्रता होती है कि वह पाठ्यक्रम से पृथक हटकर छात्रों की शैक्षिक अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके,

8. इसमें मूल्यांकन की प्रक्रिया छात्रों की गतिविधियों पर एवं प्रोजेक्ट कार्य पर आधारित होती है, इसमें विशेष परीक्षाओं का प्रावधान नहीं होता है,

प्रगतिशील एवं बाल केन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व–

1. प्रगतिशील एवं बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था सामुदायिक विकास के लिए आवश्यक है,
2. प्रगतिशील शिक्षा के माध्यम से समाज एवं राष्ट्रीय विकास के उद्देश्य को प्राप्त किया जाता है,
3. इसके माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था तथा निर्देशन एवं परामर्श की सर्वोत्तम व्यवस्था सम्पन्न की जाती है,
4. इसके माध्यम से प्रजातान्त्रिक दृष्किोण एवं वैज्ञानिक दृष्टिोण का विकास सम्भव होता है,
5. इसके माध्यम से छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास एवं सृजनात्मक विकास की भावना विकसित की जाती है,
6. प्रगतिशील शिक्षा में सार्वजनिक हित की भावना का बीजारोपण छात्रों में किया जाता है,

EduBull.com